वन्दना

धम्म में प्रार्थना नहीं, आचरण (अनुसरण) है।

सरणा गमन

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स ।
नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स ।।
नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स ।।।

मैं उन बुद्ध को नमन करता हूँ, जो अर्हत सम्यक-सम्बुद्ध है।
मैं उन बुद्ध को नमन करता हूँ, जो अर्हत सम्यक-सम्बुद्ध है।।
मैं उन बुद्ध को नमन करता हूँ, जो अर्हत सम्यक-सम्बुद्ध है।।।

सरणत्तयं

बुद्ध सरणं गच्छामि ।।
धम्म सरणं गच्छामि ।।
संघं सरणं गच्छामि ।।
दुतियम्पि, बुद्धं सरणं गच्छामि ।।
दुतियम्पि, धम्मं सरणं गच्छामि ।।
दुतियम्पि, संघं सरणं गच्छामि ।।
ततियम्पि, बुद्धं सरणं गच्छामि ।।
ततियम्पि, धम्मं सरणं गच्छामि ।।
ततियम्पि, संघं सरणं गच्छामि ।।

तीन अनुसरण

मैं बुद्ध का अनुसरण करता हूँ
मैं धम्म का अनुसरण करता हूँ
मैं संघ का अनुसरण करता हूँ
दूसरी बार मैं बुद्ध का अनुसरण करता हूँ
दूसरी बार मैं धम्म का अनुसरण करता हूँ
दूसरी बार मैं संघ का अनुसरण करता हूँ
तीसरी बार मैं बुद्ध का अनुसरण करता हूँ
तीसरी बार मैं धम्म का अनुसरण करता हूँ
तीसरी बार मैं संघ का अनुसरण करता हूँ

पञ्चसीलानि

पाणातिपाता वेरमणी सिक्खापदं समादियामि ।
अदिन्नादाना वेरमणी सिक्खापदं समादियामि ।
कामेसु मिच्छाचारा वेरमणी सिक्खापदं समादियामि।
मुसावादा वेरमणी सिक्खापदं समादियामि ।
सुरा–मेरय–मज्ज पमादट्ठाना वेरमणी सिक्खापदं समादियामि।

पंचशील

१. मैं जीव हिंसा से अलिप्त रहने की प्रतीज्ञा करता हूँ।
२. मैं चोरी करने से अलिप्त रहने की प्रतीज्ञा करता हूँ।
३. मैं कामवासना के अनाचार से अलिप्त रहने की प्रतीज्ञा करता हूँ।
४. मैं झुठ बोलने से अलिप्त रहने की प्रतीज्ञा करता हूँ।
५. मैं मद्य और अन्य सभी मादक वस्तुओं के सेवन से अलिप्त रहने की प्रतीज्ञा करता हूँ।

सब्ब पापस्स अकरणं, कुसलस्स उपसंपदा।
सचित्तपरियोदपनं, एतं बुद्धान सासनं।।

कोई भी पाप नहीं करना, कुशल कर्म का संवर्धन करना,
स्वचित्तकी परिशुद्धी करना, यही बुद्ध का
अनुशासन (धम्म) है।।
साधु! साधु!! साधु!!!

बुद्ध धम्म के अधिष्ठान

बुद्ध धम्म के दो अधिष्ठान है।

१. बुद्ध के धम्म का केन्द्र बिन्दु आदमी है, इसलिए पृथ्वीपर रहते समय आदमी का आदमी से जीवन के हर क्षेत्र में उचित संबंध स्थापित करना।

२. दु:ख के अस्तित्व को स्वीकृत करना और दु:ख के नाश करने का मार्ग दिखाना।

दु:ख का कारण

१. **व्यक्तिगत** - व्यक्ति के स्वंयं के आचरण से निर्माण हुआ दु:ख, अपने कर्मो से निर्मित दु:ख।

२. **सामाजिक** - विषमता के व्यवहार से और अन्याय के कारण निर्मित दु:ख।

३. **प्राकृतिक** - रेल्वे , विमान, वाहन इत्यादी दुर्घटना के कारण और तुफान, बाढ़ , भुकंप इत्यादि के कारण निर्मित दु:ख।

दु:ख का निवारण

१. विशुद्धीमार्ग (पंचशील) २) सदाचरण का मार्ग (अष्टांगिक मार्ग) ३) सदगुण का मार्ग (पारमिता) इनका अनुसरण करने से दु:ख का नाश होता है ।

विशुद्धी मार्ग (पंचशील)

◆ हर आदमी के लिए जीवन का कोई मापदंड होना चाहिये जिससे वह अपनी अच्छाई-बुराई को माप सके। पंचशील जीवनकी अच्छाई बुराई मापने के मापदंड है।

◆ अच्छा कार्य करने के लिए व्यक्तिगत शुद्धी आवश्यक है।

◆ पंचशील आदमी और समाज दोनों के लिए, कल्याणकारी है। इसलिए, अपने पूरे सामर्थ्य के साथ जीवन पर्यन्त उनका पालन करना चाहिये।

सदाचरण का मार्ग (अष्टांगिक मार्ग)

१) 'सम्यक दृष्टी' -

◆ अष्टांगिक मार्ग में सम्यक दृष्टि प्रथम और प्रधान है।

◆ मन ही एक ऐसा साधन है, जिसके माध्यम से आदमी को प्रकाश की प्राप्ति हो सकती है।

◆ आदमी में एक बल है, एक शक्ति है जिसे संकल्प-बल या इच्छा-शक्ति कहा जाता है। जब आदमी के सम्मुख कोई उपयुक्त आदर्श उपस्थित होता है तो इस इच्छा-शक्ति को जागृत और क्रिया-शील बनाया जा सकता है।

◆ मन सही दिशा में अग्रसर होने पर आदमी को बंधन-मुक्त कर सकता है।

◆ यह है जो सम्यक दृष्टि कर सकती है।

◆ अविद्या का विनाश ही सम्यक-दृष्टि का उद्देश्य है। यह मिथ्या-

दृष्टि की विरोधिनी है।

◆ अविद्या का अर्थ है, आदमी दु:ख को न जान सके, आदमी दु:ख के निरोध के उपाय को न जान सके-आदमी इन महान सत्यों को न जान सके।

◆ सम्यक दृष्टि का अर्थ है, आदमी कर्म-काण्ड के क्रिया-कलाप को व्यर्थ समझे, आदमी शास्त्रों की पवित्रता के मिथ्या-विश्वास से मुक्त हो।

◆ सम्यक दृष्टि का अर्थ है, आदमी ऐसी सब मिथ्या-धारणाओं से मुक्त हो जो आदमी के मन की कल्पना-मात्र है और जिनका आदमी के अनुभव या यथार्थता से किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं।

◆ सम्यक -दृष्टि का अर्थ है, आदमी का मन स्वतन्त्र हो, आदमी के विचार स्वतन्त्र हो।

◆ सम्यक दृष्टि श्रेष्ठ जीवन की प्रस्तावना और सभी चीजोंकी चाभी है।

◆ सम्यक दृष्टि का मतलब कार्य-कारण भाव को जानना है।

२) 'सम्यक संकल्प' -

◆ सम्यक संकल्प का अर्थ है, हमारी आशायें, हमारी आकांक्षाये ऊंचे स्तर की हों, निम्नस्तर की न हो; वह योग्य हो, अयोग्य न हों।

३) 'सम्यक वाणी' -

◆ सम्यकवाणी का अर्थ है, (१) आदमी सत्य ही बोले, (२) आदमी असत्य न बोले, (३) आदमी दूसरों की बुराई न करता फिरे, (४) आदमी दूसरों के बारे में झूठी बातें न फैलाता

फिर, (५) आदमी किसी के प्रति गाली-गलौज की या कठोर वचनों का व्यवहार न करे, (६) आदमी सभी के साथ विनम्र वाणी में व्यवहार करे, (७) आदमी व्यर्थ की, बेमतलब, मूर्खतापूर्ण बातें न करता रहे, बल्कि उसकी वाणी बुद्धिसंगत हो, सार्थक हो और उद्देशपूर्ण हो।

◆ सम्यक वाणी का व्यवहार न किसी के भय की अपेक्षा रखता है और न किसी के पक्षपात की। इसका इससे कुछ भी संबंध नही होना चाहिये कि कोई बड़ा आदमी उसके बारे में क्या सोचने लगेगा अथवा सम्यक वाणी के व्यवहार से उसकी क्या हानि हो सकती है।

◆ सम्यक वाणी का मापदंड न किसी ऊपर के आदमी की आज्ञा है और न किसी व्यक्तिकों होनेवाला व्यक्तिगत लाभ है।

४) 'सम्यक - कर्मान्त' -

◆ सम्यक-कर्मान्त योग्य व्यवहार की शिक्षा देता है। हमारा हर कार्य ऐसा हो जिसके करते समय हम दूसरों की भावनाओं और अधिकारों का ख्याल रखें।

◆ सम्यक कर्मान्त का माप-दण्ड यही है कि हमारा कार्य जीवन के जो मुख्य नियम है उनसे अधिक से अधिक समन्वय रखता हो।

५) 'सम्यक आजीविका' -

◆ बिना किसी को हानि पहुंचाये अथवा बिना किसी के साथ अन्याय किये अपनी जीविका कमाना यही सम्यक-आजीविका है।

६) 'सम्यक व्यायाम' -

◆ सम्यक व्यायाम; अविद्या को नष्ट करने के प्रयास की प्रथम

सीढी है। यह दु:खद कारागार के द्वार तक पहुंचने का रास्ता है, ताकि उसे खोला जा सके।

सम्यक व्यायाम के चार उद्देश्य है -

अ) अष्टांगिक-मार्ग विरोधी चित्त-प्रवृत्तियों की उत्पत्ति को रोकना।
ब) ऐसी चित्त-प्रवृत्तियों को दबाना जो उत्पन्न हो गई हों।
क) ऐसी चित्त-प्रवृत्तियों को उत्पन्न करना जो अष्टांगिक मार्ग की आवश्यकताओं की पूर्ति में सहाय्यक हों।
ड) ऐसी उत्पन्न चित्त-प्रवृत्तियों में और भी अधिक वृद्धी करना तथा उनका विकास करना।

७) 'सम्यक स्मृति' -

◆ सम्यक स्मृति का अर्थ है, हर बात पर ध्यान देना। यह मन की सतत् जागरूकता है। मन में जो अकुशल विचार उठते है, उनकी चौकीदारी करना सम्यक स्मृति का ही एक दुसरा नाम है।

८) 'सम्यक समाधि' -

◆ जो आदमी सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वाणी, सम्यक् कर्मांत, सम्यक् आजीविका, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति को प्राप्त करना चाहता है, उसके मार्ग में पांच बाधायें या बंधन आते है। यह है लोभ, द्वेष, आलस्य, संशय तथा अनिश्चय। इन बाधाओं को जीत लेना या तोड़ना आवश्यक है। इन बंधनो से मुक्त होने का उपाय समाधि है। समाधि और सम्यक समाधि एकही बात नहीं है। दोनो में बडा अंतर है।

◆ समाधि का मतलब है केवल चित्त की एकाग्रता। इसमें संदेह नहीं कि इससे वैसे ध्यानों को प्राप्त किया जा सकता है कि जिनके

रहते यह पाँचों संयोजन या बंधन स्थगित रहते है।

◆ लेकिन ध्यान की यह अवस्थायें अस्थाई है। इसलिये संयोजन या बंधन भी अस्थाई तौर पर ही स्थगित रहते है। आवश्यकता है चित्त में स्थाई परिवर्तन लाने की। इसप्रकार का स्थाई परिवर्तन सम्यक समाधि के द्वारा ही लाया जा सकता है।

◆ केवल समाधि यह एक नकारात्मक स्थिति है, क्योंकि यह इतना ही तो करती है कि संयोजनों को अस्थाई तौर पर स्थागित रखें। इस में मन का स्थाई परिवर्तन निहित नही है। सम्यक समाधि एक भावात्मक वस्तु है। यह मन को कुशल कर्मो का एकाग्रता के साथ चिंतन करने का अभ्यास डालती है और इसप्रकार मन की संयोजनोंत्पन्न अकुशल कर्मो की ओर आकर्षित होने की प्रवृत्तिको ही समाप्त कर देती है।

◆ सम्यक समाधि मन को कुशल और हमेशा कुशल ही कुशल सोचने की आदत डाल देती है। सम्यक समाधि मन को वह अपेक्षित शक्ति देती है, जिससे आदमी कल्याणरत रह सके।

अष्टांगिक मार्ग का अनुसरण करने से अन्याय और अमानवीयता समाप्त होगी।

लोभ और द्वेष से मुक्ति का मार्ग मध्यम मार्ग (अष्टांगिक मार्ग) है। यह मार्ग हमें दृष्टि देता है, हमें जानकारी और ज्ञान देता है। वह हमें शान्ति, अभिज्ञा, बोधि और निर्वाण की ओर ले जाता है।

१) शील पारमिता - 'शील का अर्थ है, नैतिकता, अकुशल न करने की प्रवृत्ति और कुशल करने की प्रवृत्ति; बुराई करने में लज्जा-भय मानना; लज्जा-भय के कारण पाप से बचे रहने का प्रयास करना शील है। शील का मतलब है पापभीरूता।

२) नैष्क्रम्य पारमिता - नैष्क्रम्य का अर्थ है, सांसारिक काम-भोगों का त्याग ।

३) दान पारमिता - किसी भी प्रकार की स्वार्थपूर्ति की आशा के बिना दूसरों की भलाई के निमित्त अपनी संपत्ति का ही नहीं, अपने रक्त, अपने शरीर के अंगों और यहाँ तक की अपने प्राणों तक का बलिदान कर देना।

४) वीर्य पारमिता - वीर्य का अर्थ है, सम्यक प्रयत्न। जो कुछ एक बार करने का निश्चय या संकल्प कर लिया उसे अपने पूरे सामर्थ्य से करने का प्रयास करना और बिना उसे पूरा किये पीछे मुड़कर नही देखना।

५) शान्ति पारमिता - शान्ति का अर्थ है, क्षमा-शीलता। घृणा के उत्तर में घृणा नही करना यही इसका सार है। क्योंकि घृणा से तो घृणा कभी मिटती ही नही। क्षमाशीलता से ही घृणा का नाश होता है।

६) सत्य पारमिता - सत्य का अर्थ है, झूठ न बोलना। आदमी को कभी झूठ नही बोलना चाहिये। उसे सत्य और केवल

सत्य ही बोलना चाहिये।

७) अधिष्ठान पारमिता - अधिष्ठान का अर्थ है, अपने उद्देश्य तक पहुँचने का दृढ निश्चय।

८) करूणा पारमिता - करूणा का अर्थ है, सभी मानवों के प्रति प्रेमभरी दया।

९) मैत्री पारमिता - मैत्री का अर्थ है, सभी प्राणियों के प्रति भ्रातृ-भावना हो। मित्रों के प्रति ही नही, शत्रुओं तक के प्रति; आदमियों के प्रति ही नही, सभी प्राणियों के प्रति।

१०) उपेक्षा पारमिता - उपेक्षा का अर्थ है, अनासक्ति। यह दूसरों के सुख-दु:ख के प्रति निरपेक्ष-भाव रखने से सर्वथा भिन्न वस्तु है। यह चित्त की वह अवस्था है जिसमें प्रिय-अप्रिय कुछ नही है। फल कुछ भी हो उसकी ओर से निरपेक्ष रहकर साधना में रत रहना।

◆ इन सदगुणों का आदमी को अपने पूरे सामर्थ्य से अभ्यास करना होता है। इसीलिये उन्हें 'पारमिता' (पूर्णत्व की अवस्था) कहा गया है।

प्रज्ञा

◆ सद्‌गुणों का अनुसरण प्रज्ञा-पूर्वक होना चाहिए। सद्‌विवेक पूर्ण ज्ञान को प्रज्ञा कहते है

◆ आदमी को अकुशल-कर्म का ज्ञान होना चाहिये, और अकुशल-कर्म की उत्पत्ति का भी ज्ञान होना चाहिये। इसी प्रकार उसे कुशल-कर्म का और कुशल कर्म की उत्पत्ति का भी ज्ञान होना चाहिये। इसी प्रकार आदमी को कुशल-कर्म ओर अकुशल-

कर्म का भेद भी स्पष्ट ज्ञात होना चाहिये। ऐसे ज्ञान के अभाव में कृति अच्छी होने के बावजुद वह सही मायने में अच्छी नहीं हो सकती। इसीलिये प्रज्ञा एक अत्यावश्यक सद्‌गुण है।

◆ सगे-सम्बन्धियों की हानि कोई बड़ी हानी नहीं है। प्रज्ञा की हानि बड़ी हानि है। सगे-सम्बन्धियों की वृद्धि कोई बड़ी अभिवृद्धि नहीं है। प्रज्ञा की वृद्धि बड़ी अभिवृद्धि है।

◆ धन की वृद्धि कोई बड़ी अभिवृद्धि नहीं है। सभी अभिवृद्धियों में श्रेष्ठ प्रज्ञा की अभिवृद्धि है।

◆ यश की हानि कोई बड़ी हानि नहीं है। प्रज्ञा की हानि बड़ी हानि है।

बुद्ध का धम्म निराशावादी न होकर आशावादी है

◆ हो सकता है कि कोई धम्म को निराशावादी समझ बैठे, क्योंकि वह आदमियों का ध्यान मानव-जाति के दुःख की ओर आकर्षित करता है। धम्म के बारे में ऐसी धारणा बनाना गलत बात होगी।

◆ निस्सन्देह धम्म दुःख के अस्तित्व को स्वीकार करता है, किन्तु यह उतना ही जोर उस दुःख के दूर करने पर भी देता है।

◆ धम्म में दोनों बाते है - इस में मानव जीवन का उद्देश्य भी निहित है और आशा का संदेश भी है।

◆ इसका उद्देश्य है अविद्या का नाश, जिसका अर्थ है, दुःख के अस्तित्व के सम्बन्ध में अज्ञान का नाश।

◆ यह आशा का संदेश भी है क्योंकि यह दुःख के नाश का

मार्ग बताता है।

◆ आदमी का **'मन'** ही सभी बातों का केन्द्रबिन्दु है। 'मन' सभी अच्छी या बुरी बातों का उद्‌गमस्थान है।

◆ बुद्ध केवल 'मार्गदाता' थे, वह 'मोक्षदाता' नही थे। हर आदमी ने उनके बताये हुये मार्ग का अनुसरण करके अपने प्रयत्नोंसेही मुक्ति प्राप्त करनी होती है।

ब्राम्हणी सिद्धान्तों को बुद्ध ने अस्वीकार किया

चार मुख्य ब्राम्हणी सिद्धान्त है,

१. पहला ब्राम्हणी सिद्धान्त - वेद पवित्र है, वह गलती से परे है, वह दोषरहित है और किसी को भी उनमें परिवर्तन करने का अधिकार नही।

◆ वेद देवताओंकी स्तुती, पूजा और प्रार्थना का संग्रह है। उनमे आदमी के नैतिक उत्थान के लिए कुछ भी नही है।

◆ बुद्ध की शिक्षा के अनुसार सही सत्य जानना चाहिये और सत्य की खोज करने के लिए विचार स्वतंत्र चाहिये। वेदोंमे परिवर्तन करने का किसी को भी अधिकार नही ऐसा मानना मतलब आदमी के विचारोंकी स्वतंत्रता को नकारना । इसलिए बुद्ध ने इस ब्राम्हणी सिद्धान्त को अस्वीकार किया।

२. दूसरा ब्राम्हणी सिद्धान्त - यज्ञ, धार्मिक विधि, धार्मिक समारंभ करने से और ब्राम्हणों को दक्षिणा देने से ही आत्मा को मुक्ति मिलती है अर्थात आदमी को मोक्ष प्राप्ती होती है।

◆ स्वयं के स्वार्थ के लिए ईश्वर और ब्राह्मण को संतुष्ट करने

के लिए यज्ञ में प्राणियों की बलि दी जाती थी। बुद्ध अहिंसा की शिक्षा देते थे। दूसरे धार्मिक संस्कार भी मिथ्या (झुठी) दृष्टि के जनक है और सम्यक् (सही) दृष्टि निर्माण करने के लिए बाधक है। इसलिए बुद्ध ने इस ब्राम्हणी सिद्धान्त को अस्वीकार किया।

३. तीसरा ब्राम्हणी सिद्धान्त - चातुवर्ण व्यवस्था वेदों की देन है इसलिए वह बंधनकारक और अपरिवर्तनीय है।

◆ चातुवर्ण व्यवस्था ने समाज को चार वर्णो (ब्राम्हण, क्षत्रीय, वैश्य और शूद्र) मे विभाजीत किया है। आदमी जिस वर्ण मे जन्म लेता है वह उस वर्ण में मृत्युपर्यंत रहता है। इस समाज रचना के अनुसार ऊपर के वर्ग का आदमी कितना भी दुराचारी हो उसका दर्जा कम नही होता और निचले वर्ग का आदमी कितना भी सदाचारी हो उसका दर्जा ऊपर नही उठता। योग्यता और प्रगती को इस समाज व्यवस्था में कोई स्थान नही है। अपना वर्चस्व कायम रखने के लिए ब्राम्हणोंने अपने स्वार्थवश यह कठोर और जुलमी समाज रचना बनाई। उन्हे समता और स्वतंत्रता पसंद नही। वह समता के विरोधी है। ब्राम्हणी धर्म (हिन्दु धर्म) में केवल विषमता नही, वर्गवार विषमता है। समाज का विभाजन कर, एक वर्ग के लोगोंका दूसरे वर्ग के लोगों के प्रति द्वेष निर्माण कर, अल्पसंख्यक लोगोंका बहुसंख्यक लोगोंपर प्रभुत्व कायम रखने की यह ब्राम्हणोंकी दुष्टबूद्धी योजना है। निचले वर्ग के बहुसंख्यक लोगोंको साधनहीन बनाकर, उनपर बंदिश लगाकर, उनपर जुल्म कर उन्हे हमेशा के लिए गुलाम बनाये रखने का यह ब्राम्हणी

है इसलिए बुद्ध ने इस ब्राम्हणी सिद्धान्त को अस्वीकार किया।

४) चौथा ब्राम्हणी सिद्धान्त - 'कर्मवाद' : ब्राम्हणी कर्मवाद के अनुसार आदमी के अच्छे-बुरे कर्म का प्रभाव उसकी आत्मा पर होता है। आदमी की मृत्यू के पश्चात उसकी आत्मा नये शरीर मे प्रवेश करती है और उसका पुनर्जन्म होता है। पूर्व जन्म मे उसके कर्मों का प्रभाव उसकी आत्मापर होने के कारण नये जन्म मे उसकी अच्छी या बुरी स्थिती उसके पूर्व जन्म के अच्छे या बुरे कर्म का उसकी आत्मापर हुये प्रभाव पर निर्भर करती है। अर्थात् नये जन्म मे आदमी की अच्छी स्थिती होने का कारण उसके पुर्वजन्म के अच्छे कर्म है और नये जन्म मे उसकी बुरी स्थिती होने का कारण उसके पुर्व जन्म के बुरे कर्म है।

◆ जब आत्मा का अस्तित्व नही है तब उसे आदमी की मृत्यु के बाद नये शरीर मे जाना संभव नही। शूद्रों को शिक्षा का अधिकार नही होने के कारण वह अज्ञानी रहे और उन्होने अपनी गरीबी और दु:खों को अपने पुर्वजन्म के बुरे कर्म का परिणाम है इसे स्वीकार किया। ब्राम्हणी कर्मवाद ने उन्हे अपनी बुरी स्थिती के लिये वे स्वयं ही जिम्मेदार है, दूसरा कोई नही ऐसा मानने को बाध्य किया। ब्राम्हणी धर्म के कारण उनकी यह दुरावस्था हुई इसे वह समझ ही नही पाये। ब्राम्हणी धर्म में उनकी ही नही तो स्त्रियोंकी भी (वह चाहे जिस वर्ग की हो) मानवता पूरी नष्ट हो चुकी और शूद्र और स्त्रियों को कमजोर बना दिया। उनका जीवन

से समझ नही पाये इसलिए अपने शोषणकर्ता ब्राम्हण धर्म के विरूद्ध क्रांती करने की बजाय वह उस धर्म के भक्त और समर्थक बन गये। क्रांती करने की प्रवृत्ती को पूरी तरह समाप्त करने के लिए ब्राम्हणोंने 'कर्मवाद' का सिद्धान्त बनाया ऐसा बुद्ध का मानना था।

◆ लोगों की दरिद्रता और उत्पीडन की स्थिति के लिए समाज और शासन उत्तरदायी होता है। परन्तु ऐसें लोगों को कर्मवाद के सिद्धान्त ने उनकी दुरावस्था के लिए वही जिम्मेदार है ऐसा बताकर, शासन और समाज को लोगों के दुरावस्था दूर करने के उनके उत्तरदायित्व से उन्हें मुक्त करना यही एकमात्र उद्देश था। अन्यथा ऐसे अमानवीय, अन्यायी और बुद्धि विसंगत सिद्धान्त की ब्राम्हणोंने खोज नही की होती।

◆ तथागत ने हिन्दु धर्म के इस कर्मवाद के सिद्धान्त को अस्वीकार किया और अपना मानवता पर आधारित, बुद्धि संगत कर्मनियम बनाया। इसका वर्णन आगे 'धम्म' शीर्षक के नीचे किया गया है ।

बुद्ध के धम्म के संबंध में विविध मत

१) "बुद्ध की यथार्थ शिक्षाये कौन सी है ?"

२) यह एक ऐसा प्रश्न है जिस पर बुद्ध के कोई दो अनुयायी अथवा बुद्ध-धम्म के कोई दो विद्यार्थी एकमत प्रतीत नही होते। कुछ के लिये 'समाधि' ही उनकी विशेष शिक्षा है। कुछ के लिये

धम्म चन्द विशेष रूप से दीक्षित लोगों का धम्म है। कुछ के लिये वह बहुत लोगों का धम्म है। कुछ के लिये इसमे शुष्क दार्शनिकता के अतिरिक्त और कुछ भी नही है। कुछ के लिये यह केवल रहस्यवाद है। कुछ के लिये यह संसार से स्वार्थ-पूर्ण पलायन है। कुछ के लिये यह हृदय की प्रत्येक छोटी-बड़ी भावनाओं को दफना देने का व्यवस्थित शास्त्र है।

३. बुद्ध-धम्म के सम्बन्ध में और भी भिन्न-भिन्न मतों का संग्रह किया जा सकता है।

४. इन मतों का परस्पर विरोध आश्चर्यजनक है।

५. इनमें से कुछ मत ऐसे लोगों के है जिनके मन में किसी खास एक बात के लिये विशेष आकर्षण है। ऐसे ही लोगों में से कुछ समझते है कि बुद्ध-धम्म का सार, समाधि या विपश्यना में अथवा चन्द दीक्षित लोगों का धम्म होने में है।

६. कुछ दूसरे मतों का कारण यह है कि उनका बुद्ध-धम्म का अध्ययन आकस्मिक है और इतिहास से सम्पर्क रहने के ही कारण है। वह धम्म की उत्पत्ति ओर विकास के शास्त्र के अभ्यासक भी नहीं है।

७. उनमें से कुछ बुद्ध धम्म के विद्यार्थी ही नहीं है।

८. वे नृवंश शास्त्र (वह शास्त्र जो धर्म की उत्पत्ति ओर विकास से संबंधित है) के विद्यार्थी भी नहीं है।

९. जोर डालने पर बुद्ध धम्म के कुछ विद्यार्थी बताते है कि, बुद्ध ने ''अहिंसा और शान्ति'' का सामाजिक संदेश दिया है।

बुद्ध का सामाजिक संदेश

१) ''बुद्ध ने **'न्याय, प्रेम** (मैत्री), **स्वतंत्रता, समानता** और **बंधुत्व** की शिक्षा दी।''

२) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने ही सर्व प्रथम बुद्ध का उपरोक्त सामाजिक संदेश बताया। उनके पूर्व के किसी भी लेखक ने बुद्ध का यह सामाजिक संदेश नहीं बताया था।

३) बुद्ध का धम्म मूलत: और तत्वत: सामाजिक है।

४) 'न्याय, प्रेम (मैत्री), स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व यह तत्व धम्म की आधारशिला है।

५) यही बुद्ध की यथार्थ शिक्षा है ।

बुद्ध के अनुसार धम्म का वर्गीकरण

१. धम्म २. अधम्म (जो धम्म नही) ३. सद्धम्म

धम्म

१. जीवन मे पवित्रता रखना धम्म है।

(i) शरीर की पवित्रता-हिंसा, चोरी और मिथ्याचार से अलिप्त रहना।

(ii) वाणी की पवित्रता-असत्य बोलने से अलिप्त रहना।

(iii) मन की पवित्रता-कामवासना और द्वेष इसीप्रकार आलस्य, तन्द्रा, संशय, अनिश्चय, अध्दतपन का त्याग करना।

२. जीवन मे पूर्णता प्राप्त करना धम्म है। (काया,वाचा एवं मन की)

उसी अवस्था मे हमेशा रहना यही मनकी पूर्णता है।

३. निर्वाण प्राप्त करना धम्म है

निर्वाण - निर्वाण (परमसुख) यह दूसरा कुछ और न होकर अष्टांगिक मार्ग है। निर्वाण का अर्थ है, सदाचारी जीवन। निर्वाण जीतेजी प्राप्त किया जा सकता है।

परिनिर्वाण - जब शरीर का नाश होता है, दृष्टि नष्ट होती है, संज्ञाये नष्ट होती है, चलने की क्रिया रूक जाती है तब 'परिनिर्वाण' (मृत्यु) होता है।

४. तृष्णा का त्याग धम्म है

- बुद्ध ने दरिद्रता का समर्थन नही किया। उन्होने ऐश्वर्य का स्वागत किया।
- दरिद्री मे पडे रहने की बजाय उत्साहपुर्वक प्रयत्न करके अपनी परिस्थिति को सुधारने का उन्होने उपदेश दिया।
- लोभ अथवा अमर्याद धनसंग्रह की लालसा से हमेशा सावधान रहना चाहिये।
- मारपीट, आघात, झगडे, परस्पर विरोध, कलह, निंदा तथा झूठ बोलना इन सबकी जड तृष्णा या लोभ है।

५. सभी संस्कार अनित्य है यह मानना धम्म है।

- संसार में सभी वस्तुयें अनित्य है।
- अनित्यता के सिद्धान्त के तीन पहलू है -

१) अनेक तत्वोंके मेल से बनी चीजें अनित्य है -प्राणी का शरीर

पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु नामक चार तत्वों का परिणाम है। जब इन चारों तत्वों का पृथक्करण हो जाता है तो प्राणी जीवित नही रहता।

२) व्यक्तिगत रूप से प्राणी अनित्य है - मानव निरंतर परिवर्तनशील और संवर्धनशील है। वह अपने जीवन के दो भिन्न क्षणों में भी एक जैसा नही रहता।

३) सभी जीवित वस्तुयें अपने स्वभाव से अनित्य है- संसार में जो कुछ है वह प्रतिक्षण बदल रहा है। सभी चिजों के अनित्यता के स्वभाव के कारण ही अन्य दुसरी चिजों का होना संभव है। यदि चिजों में निरंतर बदलाव नहीं होता है और वह समान स्थिति में हमेशा रहती है तब उनके जीवन में एक अवस्था से दुसरी अवस्था को प्राप्त करने का विकास नहीं होगा और जीवित चिजों का विकास पुरी तरह रूक जायेगा। यदि मानव में बदलाव नहीं हुआ होता या वह मरता नहीं और जिस अवस्था में है उसी अवस्था में रहता तो मानव मात्र की प्रगती पुरी तरह रूक जाती। (उदाहरणार्थ : यदि मानव बालक से युवा, युवा से बुजुर्ग स्वभावत: नहीं हुआ होता और वह जिस अवस्था में है उसी अवस्था में अमर रहता और मरता नहीं तब मानव का विकास नहीं हुआ होता)

◆ जो ईश्वर में विश्वास रखते है उनका कहना है कि, 'संसार का नैतिक क्रम ईश्वर ईच्छा का परिणाम है। ईश्वर ने संसार का निर्माण किया है और ईश्वर ही संसार का कर्ता-धर्ता है। वही भौतिक नियमों का रचियता भी है। नैतिक नियम आदमी की भलाई के

ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करना ही होगा। और ईश्वर की आज्ञा का पालन करने से ही नैतिक क्रम बना रहता है।

◆ यह व्याख्या किसी भी तरह से संतोषजनक नही है। क्योंकि यदि ईश्वर नैतिक नियमोंका जनक है और यदि ईश्वर ही नैतिक नियमों का आरंभ और अंत है और यदि आदमी ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करने के लिये मजबूर है तो संसार में इतनी नैतिक अराजकता या अनैतिकता क्यों है ? इस ईश्वरीय नियम के पास कौनसी शक्ति है ? इस ईश्वरीय नियम का व्यक्ति पर कौनसा अधिकार है ? उनके पास इन प्रश्नोंका कोई संतोषजनक उत्तर नही है।

◆ तथागत के अनुसार, 'विश्व के नैतिक क्रम को बनाये रखनेवाला कोई ईश्वर नही है, वह कर्म नियम ही है जो विश्व के नैतिक क्रम को बनायें हुये है। विश्व का नैतिक क्रम आदमी पर निर्भर करता है, अन्य किसी पर नही। कम्म का अर्थ है, मनुष्य द्वारा किया जानेवाला कर्म और विपाक का अर्थ है, उसका परीणाम। यदि नैतिक क्रम बुरा है तो इसका अर्थ है, कि आदमी अकुशल कर्म करता है, यदि नैतिक क्रम अच्छा है तो इसका अर्थ है, कि आदमी कुशल कर्म करता है। जिस प्रकार दिन के बाद रात आती है, उसी प्रकार कर्म के बाद उसका परिणाम आता है। कुशल कर्म से होनेवाला लाभ हर कोई उठा सकता है और अकुशल कर्म से होनेवाली हानि से भी कोई बच नही सकता। कुशल कर्म करों ताकि उससे नैतिक क्रम को बल मिले और

कर्म को हानि पहुँचे और मानवता दु:खी हो।'

◆ कर्म करने वाले को अपने कर्म का परिणाम इसी जन्म मे भोगना पडता है, भविष्य के जन्म मे नही।

◆ व्यक्ति आते रहते है, व्यक्ति जाते रहते है लेकिन विश्व का नैतिक क्रम बना रहता है और उसके साथ वह कर्म नियम भी हमेशा बना रहता है।

अधम्म

१. दैवी चमत्कार पर विश्वास करना अधम्म है।

◆ संसार मे बिना किसी कारण के कोई भी घटना या कार्य नही होता. संसार में कोई भी घटना चमत्कार नही होती।

◆ दैवी चमत्कार का खण्डन करने के पीछे बुद्ध के तीन हेतु थे। वह 'हेतुवाद' कहलाता है।

(i) आदमी बुद्धिवादी बने।

(ii) आदमी स्वतंत्रतापूर्वक सत्य की खोज कर सके।

(iii) मिथ्या विश्वास जो आदमी के खोज करने की प्रवृत्ती को समाप्त करते है, उनकी जड काट दी जाय।

२. ईश्वर में विश्वास अधम्म है।

३. ब्रम्ह मिलन मे विश्वास अधम्म है।

४. आत्मापर विश्वास अधम्म है।

५. यज्ञ पर विश्वास अधम्म है।

६. काल्पनिक बातों पर विश्वास अधम्म है।

७. धम्म ग्रंथों का केवल वाचन अधम्म है।

८. धर्मग्रंथ दोषरहित है यह मानना अधम्म है।

सद्धम्म

सद्धम्म का उद्देश्य -

(i) मन की मलिनता दूर करना।

(ii) संसार मे धम्म राज्य स्थापित करना

१. सभी के लिए ज्ञानका मार्ग खोल दे वह सद्धम्म है।

२. केवल विद्वान होना पर्याप्त नही, इससे पंडिताऊपन निर्माण होता है, यह जो सिखाता है वह सद्धम्म है।

३. प्रज्ञा आवश्यक है, यह जो सिखाता है वह सद्धम्म है।

४. प्रज्ञा के साथ शील आवश्यक है, यह जो सिखाता है वह सद्धम्म है।

५. प्रज्ञा और शील के साथ करूणा आवश्यक है, यह जो सिखाता है वह सद्धम्म है।

६. करूणा की अपेक्षा मैत्री आवश्यक है, यह जो सिखाता है वह सद्धम्म है।

७. आदमी-आदमी के बीचका भेद जो नष्ट करता है, वह सद्धम्म है।

८. आदमी का मूल्यमापन जो जन्म से नही कर्म से करता है, वह सद्धम्म है।

९. आदमी-आदमी के बीच समता बढाता है, वह सद्धम्म है।

◆ ईश्वर में विश्वास, आत्मा में विश्वास, ईश्वर की पूजा, आत्मा का सुधार, प्रार्थना आदि करके ईश्वर को प्रसन्न रखना, रस्म, यज्ञ इत्यादि करना धर्म है और यह सभी आशय धर्म शब्द से व्यक्त होते है।

◆ 'धर्म' व्यक्तिगत चीज है और आदमी को इसे अपने तक ही सीमित रखना होता है वह सार्वजनिक जीवन में बिल्कुल दखल नही देता।

◆ इसके सर्वथा विरूद्ध 'धम्म' एक सामाजिक वस्तु है। यह प्रधान रूप से और आवश्यक रूप से सामाजिक है।

◆ धम्म का अर्थ है, सदाचरण, जिस का अर्थ है, जीवन के सभी क्षेत्रों में एक आदमी का दूसरे आदमी के प्रति अच्छा व्यवहार।

◆ प्रज्ञा का अर्थ है, सद्विवेक बुद्धि। बुद्ध ने प्रज्ञा को अपने धम्म के दो स्तम्भों में से एक माना है, क्योंकि वह नही चाहते थे कि 'मिथ्या-विश्वासों' के लिये कंही कोई गुंजाईश बची रहे।

◆ करूणा का अर्थ है, दया, प्रेम (मैत्री)। इसके बिना न समाज जीवित रह सकता है और न समाज की उन्नति हो सकती है इसीलिये बुद्ध ने करूणा को अपने धम्म का दूसरा स्तम्भ बनाया।

◆ 'प्रज्ञा' और 'करूणा' का एक अलौकिक सम्मिश्रण ही तथागत का 'धम्म' है।

◆ धर्म का उद्देश संसार की उत्पत्ति का स्पष्टीकरण है और धम्म का उद्देश्य है संसार का पुनर्निमाण करना है।

१) धर्म में नैतिकता का स्थान क्या है ?
२) सच्ची बात तो यही है कि नैतिकता का 'धर्म' में कोई स्थान ही नहीं।
३) जहाँ एक आदमी का सम्बन्ध दूसरे से आता है तब नैतिकता का आरम्भ होता है।
४) प्रत्येक 'धर्म' नैतिकता सिखाता है। परंतु वह प्रत्येक धर्म का मूल नही है।
५) वह उससे जुड़ा हुआ एक डिब्बा है, जरूरत होने पर उसे जोड़ा जा सकता है और अलग भी किया जा सकता है।
६) धर्म के व्यवहार में नैतिकता आकस्मिक या प्रासंगिक है।
७) इसीलिये 'धर्म' में नैतिकता प्रभावशाली नहीं है।

धम्म और नैतिकता

१) धम्म मे नैतिकता का स्थान क्या है ?
२) सीधा सरल उत्तर है कि, नैतिकता ही धम्म है और धम्म ही नैतिकता है।
३) दूसरे शब्दों में यद्यपि धम्म में 'ईश्वर' के लिये कही कोई स्थान नही है तो भी 'धम्म में नैतिकता' का वही स्थान है जो 'धर्म में ईश्वर' का।
४) धम्म में प्रार्थनाओं के लिये, तीर्थ-यात्राओं के लिये, कर्मकाण्डों के लिये, रस्म-रिवाजों के लिये तथा बलि-कर्मों के लिये कोई जगह नही।

नही।

६) धम्म जो नैतिकता है उसका सीधा मूल-स्त्रोत आदमी को आदमी से मैत्री करने की जो आवश्यकता है, वही है।

७) इसमें ईश्वर की मंजूरी की आवश्यकता नही । ईश्वर को प्रसन्न करने के लिये आदमी को नैतिक बनने की आवश्यकता नही। अपने भले के लिये ही आदमी को यह आवश्यक है कि वह आदमी से मैत्री करे।

केवल नैतिकता पर्याप्त नही है, वह पवित्र और व्यापक होनी चाहिये।

१. ''जो शक्तीशाली है उनपर पाबन्दियां लगानेसेही निर्बलों को संरक्षण दिया जा सकता है'' यही नैतिकता का मूल और आवश्यक्ता है।

२. किसी एक दल (वर्ग) की नैतिकता उस दल तक सिमीत रहती है और वह उनके स्वार्थों की रक्षा करने के लिए होती है। ऐसी नैतिकता समाज विरोधी है।

३. यदि समाज मे समाज विरोधी दल होगे ते समाज असंगठित और बिखरा हुआ होगा।

४. असंगठित और बिखरा हुआ समाज विनाशकारी होता है क्योंकि उसमे भिन्न-भिन्न आदर्श और मापदंड होते है।

५. जबतक लोगों के जीवन के मापदंड समान न हो और जबतक लोगों के जीवन आदर्श समान न हो तबतक समाज

परस्पर मिलजुलकर रहने वाला समाज बनही नही सकता।
६. मानव को उचित और उनकी जनसंख्या के आधार पर अधिकार न देकर कोई एक समूह दूसरे पर प्रधानता रखता है तो इसका परिणाम अवश्यम्भावी परस्पर कलह होगा।
७. कलह रोकने का एक ही उपाय है कि सभी के लिये नैतिकता के समान नियम हो जिन्हे वह सभी पवित्र मानें।
८. व्यक्ति की उन्नत्ति को संरक्षण मिले इसलिये नैतिकता पवित्र मानी जानी चाहिये और वह सर्वमान्य होनी चाहिये।
९. जहाँ 'अस्तित्व का संघर्ष' है अथवा जहाँ वर्ग-विशेष का शासन है, वहाँ व्यक्ति का हित सुरक्षित नही है।
१०. दलबन्दी में पक्षपात रहता है और न्याय की आशा नहीं रहती।
११. दलबन्दी से वर्ग जड़ीभूत हो जाते है। मालिक हमेशा मालिक बने रहते है, मजदूर हमेशा मजदूर बने रहते है, विशिष्ट अधिकारी हमेशा विशिष्ट अधिकारी ही रहते है और गुलाम हमेशा गुलाम ही रहते है।
१२. इसका अर्थ है कि कुछ लोगों के लिए तो स्वतन्त्रता हो सकती है, किन्तु सभी के लिये नही। इसका अर्थ हुआ कि चन्द लोगों के लिये समानता हो सकती है, किन्तु अधिकांश के लिए नही हो सकती।
१३. इसका इलाज क्या है? एक ही इलाज है कि बन्धु-भाव को सर्वमान्य और प्रभावशाली बनाया जाय।
१४. बंधु-भाव क्या है? आदमी हर आदमी को अपना भाई

समझो। आदमीयों में भाई-चारा ही यही नैतिकता है।
१५. इसिलिये बुद्ध ने कहा कि धम्म ही नैतिकता है और जिस प्रकार धम्म पवित्र है; उसी प्रकार नैतिकता भी पवित्र है

‘अहिंसा’ का सही अर्थ

◆ सबसे मैत्री करो, ताकि तुम्हे किसी प्राणी को मारने की आवश्यकता न पडे।

◆ बुद्ध ने वैसी जीवहत्या को मना किया, जहां ‘‘जीव हत्या की चेतना (ईच्छा)’’ है। उन्होने वैसी जीव हत्या को मना नही किया जहां ‘‘जीवहत्या करने की आवश्यकता’’ है।

बौद्ध जीवन मार्ग

१. कुशल कर्म करो, अकुशल और पाप कर्म मत करो।
२. लोभ और तृष्णा से अलिप्त रहो।
३. किसी को पीडा मत दो, किसीसे द्वेष मत करो।
४. क्रोध मत करो, शत्रुता मत करो।
५. सत्य की खोज करने की मन को आदत डालो।
६. स्वयंपर विजय प्राप्त करो।
७. बुद्धिमान बनो, न्यायसंगत आचरण करो, अच्छी संगत करो, बुरी संगत मत करो।
८. विवेकशील बनो, सावधान रहो, श्रद्धावान और धैर्यशील बनो।
९. आलसी मत बनो, जागरूक रहो, प्रज्ञा को बढाओ, विचारपूर्वक काम करो, संयमी बनो।
१०. ऊंचा जीवनस्तर नही, ऊंचा आचरण (संस्कृती) रखो। मन

की शुद्ध करो। जीवनमें स्वतंत्रता, नम्रता, सदिच्छा और निस्वार्थ निर्माण करो।

११. ढोंगी मत बनो। झूठ मत बोलो और दूसरों को भी झूठ बोलने के लिए प्रवृत्त मत करो। जैसा बोलते हो वैसा आचरण करो और जैसा आचरण करते हो वैसा ही बोलो।

१२. सम्यक (सही) मार्ग चुनो और उससे विचलित मत होओ। जो मार्ग बहुजनों के कल्याण का है और प्रारंभ में, मध्य मे तथा अंत में कल्याणप्रद है ऐसे मार्ग का अनुसरण करो। अष्टांगिक मार्ग का अनुसरण करो।

१३. सत्य को सत्यही समझो असत्य को असत्यही समझो। सद्धम्म मे असद्धम्म की मिलावट मत करो।

सुखी गृहस्थ

◆ पहला सुख - न्यायपुर्वक , दूसरोंको हानि न पहुंचाकर, परिश्रमसे, बाहुबल से और पसीना बहाकर कमाये हुये धन का मालिक होने का सुख.

◆ दूसरा सुख - उपरोक्तानुसार अर्जित धन का उपयोग और पुण्यकर्म करने का सुख

◆ तीसरा सुख - ऋणग्रस्त (कर्जदार) न होने का सुख

◆ चौथा सुख - काया, वाचा और मन से निर्दोष कर्म करने का सुख

आदमी के पतन (नाश) के कारण

इस प्रकार के आदमी का पतन होता है -

१. जो धम्म से घृणा करता है।

२. जिसे दुर्गुणी आदमी अच्छे लगते है और सद्गुणी आदमी बुरे लगते है।

३. जो तन्द्रालु, गप्पी, परिश्रम न करने वाला, सुस्त और क्रोधी होता है।

४. जो सम्पत्ति होने पर भी वृद्ध माँ-बाप का पालन-पोषण नही करता।

५. जो श्रमण और श्रेष्ठ व्यक्तियों को असत्य बोलकर ठगता है।

६. जिसके पास अपार सम्पत्ति है परन्तु उसका उपभोग वह अकेलाही करता है।

७. जो अपने जन्म का, धन का और जाति का अभिमान करता है और सम्बंधियों से तिरस्कार करता है।

८. जो व्यभिचारी, शराबी और जुआरी है।

९. जो अपनी पत्नीसे संतुष्ट न रहकर वेश्या और परस्त्रियों से समागम करता है।

१०. जो असंयत फजूलखर्च आदमी या स्त्री को अधीकारी बना देता है।

११. जो क्षत्रीय, अल्पसाधन होते हुये भी सम्राट बनने की आकांक्षा रखता है।

बुरा आदमी

१. जो बिना पूछे ही , दूसरों के दुर्गुणों का वर्णन करता है।

पूछने पर, बड़े विस्तार से दूसरों के दुर्गुणों का वर्णन करता है।
२. जो बिना पूछे और पूछने पर भी दूसरो के गुण नही बताता। बहुत पूछनेपर दूसरों के गुण बताता है।
३. जो बिना पूछे और पूछे जाने पर भी अपने दुर्गुण नही बताता। बहुत पूछने पर अपने दुर्गुण बताता है लेकिन उनका पूरा ब्योरा नहीं देता है।
४. जो बिना पूछे ही अपने गुणो को बताता है और पूछने पर अपने गुणों का विस्तार से वर्णन करता है।

सर्वश्रेष्ठ पुरूष

जो अपने तथा दूसरों के कल्याण के लिए प्रयत्नशील है वह सर्वश्रेष्ठ पुरूष है।

'बुद्धवचन' मानने की कसौटी

◆ जो बात बुद्धिसंगत है, जो बात तर्कसंगत है, वह 'बुद्ध-वचन' है।

◆ जो बात मनुष्य के कल्याण से संबंधित है वह 'बुद्ध वचन' है।

◆ जिन प्रश्नों के बारे में सन्देह है और मतभेद है उनके बारे में यह निश्चय करने से पहले कि बुद्ध का निश्चित मत क्या था, यह आवश्यक है कि हम इन कसौटियों को न भूलें।

धम्मदीक्षा के दो प्रकार भिक्षु और उपासक

◆ भिक्षु की धम्म दीक्षा- धम्म दीक्षा के बाद भिक्षु 'संघ' का

सदस्य बनता है।

◆ उपासक की धम्म दीक्षा-धम्म दीक्षा के बाद उपासक बुद्ध के धम्म का सामान्य अनुयायी होता है।

◆ भिक्षु और उपासक के जीवनमार्ग मे केवल चार प्रकार का अंतर होता है।

1) भिक्षु गृहहीन परिव्राजक होता है। उपासक गृहस्थ रहता है।

2) भिक्षु के लिए शीलोंका उल्लंघन दंडनिय है। उपासक ने अपने सामर्थ्यभर अधिक से अधिक शीलों का पालन करना चाहिये।

3) भिक्षु सम्पत्ति नही रख सकता। उपासक सम्पत्ति रख सकता है।

4) भिक्षु बनने के लिए 'उपसम्पदा' नामक विधि करना आवश्यक है। उपासक बनने के लिए किसी भी प्रकार की विधि आवश्यक नही।

◆ भिक्षुने व्रतों का भंग करने पर या उसे संघ को त्यागने की ईच्छा होने पर वह भिक्षू नही रहता। उपासक उसकी ईच्छा होने पर भिक्षु बन सकता है।

◆ बुद्धने भिक्षु और उपासक यह भेद क्यों किया ?

अपने धम्म की सहायता से संसार मे सदाचार का राज्य स्थापित हो यह बुद्ध का उद्देश्य था। इसलिए उन्होने भिक्षु और उपासक का भेद न करके सबको अपने धम्म की शिक्षा दी। परन्तु वह जानते थे कि, सामान्य आदमी को धम्म की शिक्षा देने से सदाचरण पर आधारित आदर्श समाज का निर्माण नही हो सकता। आदर्श व्यवहारिक होना चाहिये। इतनाही नही, उसे उदाहरण के साथ यथार्थ रूपमे समझाना चाहिये तभी लोग उसका

स्वीकार करते है और अपनी कृति में लाते है। यह स्वीकार करने की वृत्ति निर्माण करने के लिए और सामान्य आदमी को वह अव्यवहारिक नही परन्तु व्यवहारिक है यह समझाने के लिए उस आदर्श के अनुसार वर्तन करनेवाले समाज का (भिक्षुओंका) चित्र सामान्य आदमी के सामने रखना आवश्यक है। इसलिए तथागत ने भिक्षु और उपासक यह भेद किया। भिक्षु तथागत के आदर्श समाज का मार्ग दिखाने वाला प्रकाश है और उपासक भिक्षु द्वारा दिखाये गये मार्ग पर चलने की कोशिश करता है।

भिक्षु की प्रतिज्ञा

- शीलव्रत पालन करने की प्रतिज्ञा
- आठ चीजों , [तीन चीवर (१. अंदर का वस्त्र. २. ऊपर का वस्त्र ३. ठंडी से बचाव के लिए दोहरी चादर) ४. कमर पर लपेटने का एक पट्टा ५. भिक्षा पात्र ६. उस्तरा ७. सुई धागा ८. पानी छानने का कपडा] के अलावा अन्य चीजें न रखने की प्रतिज्ञा।
- . निर्धन रहने की प्रतिज्ञा - भिक्षा मांगकर खाना, दिन मे एक बार भोजन करना, जहां विहार न हो वहां वृक्ष के नीचे रहना.
- धम्म की आज्ञा मे रहने की प्रतिज्ञा

भिक्षु के कार्य

- भिक्षु के दो कार्य है ।

१. व्यक्तिगत साधना
२. लोगों को मार्गदर्शन करना और उनकी सेवा करना.

◆ व्यक्तिगत साधना में कोई कितना भी ऊंचा क्यों न हो, यदि वह मानवीय दुखों की ओर से उदासिन है तो वह भिक्षु नही है।

बुद्ध की आदर्श भिक्षु की कल्पना

जो केवल काषायवस्त्र धारण करता है ओर भिक्षा मांगता है परन्तु यदि उसका मन चित्तमलोंसे शुद्ध नही, उसमे सदगुणों की वृद्धि नही हुई है, वह सत्य और संयम का पालन नही करता और धम्म का पालन नही करता वह भिक्षु बनने योग्य नही है। किन्तु, जिसका मन चित्तमलों से शुद्ध है, उसमे सदगुणों की वृद्धि हुई है, वह सत्य और संयम का पालन करता है और धम्म का पालन करता है वह भिक्षु बनने योग्य है।

भिक्षु और ब्राम्हण

भिक्षु ब्राम्हण के समान नही होता। भिक्षु और ब्राम्हण में भेद इसप्रकार है -

१. ब्राम्हण पुरोहित होता है, ईश्वर और आत्मा पर विश्वास के कारण वह जन्म, विवाह मृत्यु से संबंधित संस्कार तथा अन्य संस्कार मुख्य रूपसे करता है। ईश्वर और आत्मापर भिक्षु विश्वास नही करता, वह पुरोहित नही है। इसलिए, भिक्षु संस्कार नही करता।

२. ब्राम्हण जन्म से ब्राम्हण होता है, भिक्षु बनता है।

३. ब्राम्हण की जात होती है, भिक्षु की जात नही होती।

४. ब्राम्हण हमेशा के लिए ब्राम्हणही रहता है, भिक्षु का आचरण योग्य न होने पर वह भिक्षु बनकर नही रह सकता.

५. ब्राम्हण को मानसिक और नैतिक शिक्षा की आवश्यकता नही, उसे केवल धर्म की जानकारी आवश्यक है। भिक्षु को मानसिक और नैतिक शिक्षा अतिआवश्यक है।
६. ब्राम्हण धनसंग्रह करता है। भिक्षु धनसंग्रह नही करता।
७. ब्राम्हण परिवर्तन विरोधी होता है। भिक्षु परिवर्तनवादि होता है।
८. ब्राम्हण पर किसी धार्मिक संगठन के नियमों का बंधन नही होता। भिक्षुपर 'संघ' के नियमोंका बंधन होता है।

भिक्षु के कर्तव्य

भिक्षुने बहुजनों के हित के लिए और बहुजनो के सुख के लिए धम्म प्रचार करते हुये भ्रमण करते रहना चाहिये।

भिक्षुको धम्म प्रचार के लिए संघर्ष करना चाहिये

भिक्षुओं को संबोधीत करते हुये बुद्ध ने कहा - भिक्षुओं, हम श्रेष्ठ धम्म, श्रेष्ठ ध्येय और श्रेष्ठ प्रज्ञा लिए युद्ध करते है इसीलिये हम योद्धा कहलाते है। जब धम्म को खतरा हो, संघर्ष से मत घबराओ। ऐसे समय भीगी बिल्ली बने मत बैठे रहो।

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर द्वारा दी गई
22 प्रतिज्ञा

१.मैं ब्रम्हा, विष्णु और महेश को ईश्वर नही मानूंगा और ना ही उनकी उपासना करूंगा।

◆ यदि सभी प्राणियों मे कोई ऐसा सर्वशक्तिमान ईश्वर व्याप्त है जो उन्हे सुखी अथवा दु:खी बनाता है और जो उनसे पाप पुण्य कराता है तो ऐसा ईश्वर भी पाप से सनता है। या तो आदमी ईश्वर की आज्ञा में नही है या ईश्वर न्यायी या नेक नहीं है अथवा ईश्वर अंधा है। (बुद्ध और उनका धम्म पृ. १९८)

◆ नारद ने ब्रम्हा, विष्णू और महेश की पत्नियों को बताया कि, अत्री ऋषि की पत्नि अनुसया यह महान पतिव्रता है। अपने से कोई और स्त्री अधिक पतिव्रता हो ऐसा वे देख नही सकती थी। तब इन तीनों महिलाओं ने अपने अपने पतियों को अनुसया का पतिव्रत्य हरण करने को कहा; और अपनी स्त्रियों का कहना मानकर ये तीनों इस काम के लिए तैयार हो गये। यह तीनों अनुसया के घर गये। उसके पति को कुछ काम बताकर बाहर भेज दिया और खुद अनुसया के सहवास में रहने लगे। इस अवस्था में उसने एक बालक को जन्म दिया और उस बालक का जन्मदाता कौन है यह प्रश्न उपस्थित होने पर उन तीनों पर समान जवाबदारी डालने हेतु उस बालक को तीन मुँह लगाये गये। वही दत्तात्रय का अवतार है। (डॉ. बाबासाहब आंबेडकर लेखन और भाषण खण्ड १८ भाग २ पृ. ४७)

ईश्वर विश्वास ही प्रार्थना और पूजा के सामर्थ्य मे विश्वास का उत्पादक है। और प्रार्थना कराने की जरूरत ने ही पादरी-पुरोहित को जन्म दिया। और पुरोहित ही वह शरारती दिमाग था जिसने इतने अंधविश्वास को जन्म दिया और सम्यक् दृष्टि के मार्ग को अवरूद्ध कर दिया। (बुद्ध और उनका धम्म पृ.१९८)

२. मैं राम और कृष्ण को ईश्वर नही मानूंगा और ना ही उनकी उपासना करूंगा।

राम :

◆ राम का जन्म अप्रत्याशित था .... उसका जन्म (पिण्ड) खाने से हुआ था, जो ऋषी शृंग ने तैयार किया था। यद्यपि दोनो पति-पत्नी नही थे फिर भी, उनका जन्म यदि बदनामी की बात नही है तो भी अप्राकृतिक तो है ही। (डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर संपूर्ण वाङमय खण्ड ८-पृष्ठ ३२५) (वाल्मिकाय रामायण, प्रथम भाग, पृष्ठ ६४)

◆ सीता राम की बहन थी। दोनो दशरथ की संतान थे (डॉ.बाबासाहेब आंबडकर संपूर्ण खण्ड ८- पृष्ठ ३३६, बुद्ध रामायण)

◆ राम की अनेक पत्नियां थी। इसके साथ ही उनकी उपपत्नियां भी थी। (डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर संपूर्ण वाङमय खण्ड ८ - पृष्ठ क्र. ३२६, अयोध्याकाण्ड,सर्ग ८ श्लोक १२)

◆ जब युद्ध हो रहा था तो सुग्रीव के गले माला थी। वृक्ष के पीछे छिपे राम ने निशाना साधा। ..... बाली की हत्या राम के चरित्र पर बहुत बडा धब्बा है। .... यह कायरता भी थी क्योंकि बाली निहत्था था। (डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर संपूर्ण वाङमय खण्ड ८-पृष्ठ

◆ "मुझे तुम्हारे चरित्र पर संदेह है। रावण ने तुम्हारा शीलभंग किया होगा। मुझे तुम्हे देखते ही उबाल आ रहा है। ..... मै यह नही सोच सकता कि तुम जैसी सुंदर नारी से रावण ने आनंद नही लूटा होगा।" (डॉ-बाबासाहेब आंबेडकर संपूर्ण वाङमय खण्ड ८-पृष्ठ ३२८) (वाल्मिकीय रामायण, द्वितीय भाग, पृष्ठ १४१४)

◆ सीता ने राम के पास वापस जाने के बजाय मर जाना बेहतर समझा। जिस राम ने उसके साथ कसाई से अच्छा व्यवहार नही किया था, यह उस सीता की गति और राम का पाप था। (डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर संपूर्ण वाङमय खण्ड ८-पृष्ठ ३३१) (वाल्मिकीय रामायण, द्वितीय भाग, पृष्ठ १६५७,१६५८)

◆ राम मद्य त्यागी नही थे। वे प्रचूर मात्रा में मदिरा पान करते थे ओर सीता को भी मदिरा पान में सहभागिनी बनाते थे। .... नाचगाने मे अप्सरांए सम्मिलित होती थी। ... राम सुरा और सूंदरियों के मध्ये विराजते थे। (डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर संपूर्ण वाङमय खण्ड ८-पृष्ठ ३३२) (वाल्मिकीय रामायण, द्वितीय भाग, पृष्ठ १५६६ सर्ग ४२ श्लोक ८)

◆ उनके राज में से संम्भवता कोई शूद्र तपस्या कर रहा था। .... वह शंभूक नाम का शूद्र था .... राम मे बेझिझक उसका सिर काट दिया। (डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर संपूर्ण वाङमय खण्ड ८- पृष्ठ ३३२) (वाल्मीकीय रामायण, द्वितीय भाग, पृष्ठ १६२५)

कृष्ण :

◆ कूछ गोपीयां यमुना के किनारे वस्त्र छोडकर नदी में नहा रही थी। कृष्ण ने उनके कपडे उठा लिये ओर नदी के किनारे

एक वृक्ष पर चढ गए। .... वस्त्र देने से इंकार कर दिया जब तक अपने वस्त्र लेने वे वृक्ष तक स्वंय चलकर न आए। जब वे आ गई तो कृष्ण प्रसन्न हुए। (डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर संपूर्ण वाङमय खण्ड ८-पृष्ठ ३३५,भागवत)

◆ कृष्ण की युवावस्था में .... गोपिकाओं के साथ उनके अवैध संबंधो की भरमार है। .... कृष्ण के जीवन में राधा नामक गोपी के बीच अवैध संबंधो की काहानी है।.... कृष्ण ने अपनी विवाहित पत्नी रूक्मिणी को त्याग दिया और किसी अन्य की पत्नी के साथ खुल्लमखुला रहने लगे। रूक्मिणी की सौंतो की कतार बढती गई और वह संख्या सोलह हजार एक सौ आठ हो गयी। .... उनकी पटरानीयां भी आठ थी। (डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर संपूर्ण वाङमय खण्ड ८ - पृष्ठ ३३६,३३७) (ब्रम्ह वैवर्त पूराण खण्ड ४, अध्याय १५) (महाभारत, हरिवंशपुराण, पृष्ठ ४५१)

◆ कृष्ण एक योद्धा भी थे ... उनका प्रत्येक कार्य, चाहे युद्ध हो अथवा राजनिति, सब अनैतिक था। उनका सर्वप्रथम कार्य अपने मामा कंस की हत्या था। ... कंस के धोबी से वस्त्र मांगे... उसे मार डाला और मनचाहे वस्त्र ले लिए। (डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर संपूर्ण वाङमय खण्ड ८-पृष्ठ ३३६) (महाभारत, हरिवंशपुराण, पृष्ठ ३२३)

◆ जब द्रोण धर्मयुद्ध में पराजीत नही हो रहे थे तो कृष्ण ने उन्हे अधर्म युद्ध मे पराजीत किया। (डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर संपूर्ण वाङमय खण्ड ८ पृष्ठ ३४०) (महाभारत, चतुर्थ खण्ड, पृष्ठ ३६९२,३६९३,३७००)

◆ कृष्ण ने माया से सूर्य को छिपा दिया। इस पर जयद्रथ बाहार आ गया तो कृष्ण ने माया हटा ली और सुर्य निकल आया और

अर्जून ने जयद्रथ का वध कर दिया। (डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर संपूर्ण वाङमय खण्ड ८ पृष्ठ ३४०) (महाभारत, चतुर्थ खण्ड, पृष्ठ ३५२४,३५२७)

३. मै, गौरी, गणपति आदि हिन्दू धर्म के किसी भी देवी देवता को नहीं मानूंगा और ना ही उनकी उपासना करूंगा।

◆ जब पार्वती नग्न होकर स्नान कर रही थी तब शंकर कहीं गया था इसलिए पार्वती ने किसी से उपसर्ग नही पहुंचना चाहिए इसके लिए अपने शरीर का मैल निकालकर उसका रक्षणकर्ता गणपती बनाया। तब मैल से पैदा हुये अमंगल को देवता क्यों मानना चाहिए। ईश्वर निष्कलंक मूर्तिमय तथा पवित्र होना चाहिए, परंतु हिन्दू धर्म के देवता बडे विचित्र है इसलिए उनकी पूजा नही करनी चाहिए। (डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर लखेन और भाषण खण्ड १८, भाग २ पृ.४६)

४. ईश्वर ने अवतार लिया इसपर मेरा विश्वास नहीं है।

◆ जब कोई ईश्वर ही नहीं है तो उसका अवतार कैसे हो सकता है?

५. बुद्ध विष्णु का अवतार है, यह झुठा और भ्रामक प्रचार है ऐसा मै मानता हूं ।

◆ तथागत ने न अपने लिए और न अपने धम्म शासन के लिए ईश्वर या ईश्वरीय होने का दावा किया। उनका दावा इतना ही था कि वे भी बहुत से मनुष्यों में से एक है और उनका संदेश एक आदमी द्वारा दूसरे को दिया गया संदेश है। (बुद्ध और उनका धम्म पृष्ठ १७४)

◆ विष्णु को ईश्वर माना जाता है और बुद्ध ने ईश्वर या ईश्वरीय होने से इंकार किया है इसलिए बुद्ध विष्णु का अवतार नही हो सकते।

६. मैं श्राद्ध पक्ष नहीं करूंगा और ना ही पिंडदान करूंगा।

◆ बुद्ध धार्मिक रस्मों एवं व्यर्थ के धार्मिक क्रियाकलापों के विरोधी थे, उनके विरोध का कारण यही था कि वे सब मिथ्या विश्वास के घर है और मिथ्या विश्वास सम्यक दृष्टि का शत्रु है। (बुद्ध और उनका धम्म पृ.१९८)

हिन्दू धर्म के हम जो त्यौहार मनाते है वे सभी छोड देना चाहिए। (डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर लेखन और भाषण खण्ड १८ भाग ३ पृ.४६)

७. मैं बुद्ध धम्म के विरूद्ध विसंगत ऐसा कोई भी आचरण नही करूगा।

◆ बुद्ध धम्म का केन्द्र बिंदु आदमी है और इस पृथ्वी पर रहते समय आदमी का आदमी के प्रति क्या कर्तव्य होना चाहिए यह बुद्ध धम्म की प्रथम स्थापना है। दु:ख के अस्तित्व की स्वीकृति और दु:ख के नाश का मार्ग दिखाना यही धम्म की आधारशिला है।

८. मैं कोई भी क्रिया-कर्म ब्राम्हणों के हाथों से नही कराऊंगा।

◆ पुरोहित (ब्राह्मण) ही वह शरारती दिमाग था जिसने इतने अंधविश्वास को जन्म दिया और सम्यक दृष्टि का मार्ग अवरूद्ध किया (बुद्ध और उनका धम्म पृष्ठ १९८)

९. सभी मनुष्य मात्र समान है, ऐसा मै मानता हूँ।

◆ चार्तुवर्ण के सिद्धांत की आत्मा ही है ''असमानता''। यह सामाजिक असमानता किसी सामाजिक खेत की अनायास उगी हुई उपज नही है। असमानता ब्राम्हणवाद का शास्त्रसंगत सिद्धात

हो बुद्ध ने इसकी जड मूल से विरोध किया। बुद्ध जातिवाद के सबसे बड़े विरोधी थे। वे समानता के सबसे बड़े समर्थक थे। (बुद्ध और उनका धम्म पृष्ठ २३८)

◆ शूद्र और स्त्रियां जिनकी मानवता को ब्राम्हणवाद ने छिन्न-भिन्न कर दिया था -सर्वथा शक्तिहीन थे। वह इस पद्धति के विरूद्ध जरा भी सिर नही उठा सकते थे (बुद्ध और उनका धम्म पृष्ठ ७७)

१०. मै समता की स्थापना के लिये प्रयत्न करूंगा।

◆ बुद्ध जानते थे कि चार्तुवर्ण व्यवस्था भगवान की बनाई हुई सामाजिक व्यवस्था बताई जाती है इसीलिए इसमें सुधार नहीं हो सकता इसे केवल समाप्त ही किया जा सकता है। (बुद्ध और उनका धम्म पृष्ठ ७८)

११.मै बुद्ध के बताये हुए अष्टांगिक मार्ग का अनुसरण करंगा।

१२.मै बुद्ध के द्वारा बताई हुई दस पारमिताओं का पालन करूगा।

१३.मै सभी प्राणी मात्र पर दया करूंगा और उनका लालन-पालन करूंगा।

१४. मै चोरी नहीं करंगा।

१५. मैं झूठ नहीं बोलूंगा।

१६. मै व्यभिचार नहीं करूंगा।

१७. मैं शराब नहीं पीउंगा।

१८. मैं प्रज्ञा, शील और करूणा इन बुद्ध धम्म के तीन तत्वों का समन्वय साधकर अपना जीवन व्यतीत करूंगा।

मात्र को असमान और नीच मानने वाले अपने पुराने हिन्दु धर्म का त्याग करता हूँ और बुद्ध के धम्म को स्वीकार करता हूँ।

◆ हिन्दु धर्म में चातुर्वर्ण पद्धती कुछ विशिष्ट नियमोंपर आधारित है।

१. पहला नियम है कि समाज चार वर्णों में विभक्त होना चाहिये १. ब्राम्हण २. क्षत्रिय ३. वैश्य ४. शूद्र।

२. दूसरा नियम है कि इन चारों वर्णों में सामाजिक समानता नही हो सकती। इन सबको क्रमिक असमानता के नियम से परस्पर बंधा रहना होगा।

३. तीसरे नियम का संबंध पेशा या जीविका के साधनों से है। ब्राम्हणों का पेशा है पढ़ना, पढ़ाना और धार्मिक संस्कार कराना। क्षत्रियों का पेशा है - लढ़ना, मरना और मारना। वैश्यों का पेशा है - व्यापार। शूद्रों का पेशा है उपर के तीनों वर्गों की सेवा करना। इन चारों वर्गों का यह विभाजन ऐसा नही है कि एक वर्ग किसी दूसरे वर्ग का पेशा कर सके। हर वर्ग केवल अपना अपना ही पेशा कर सकता है। कोई भी एक वर्ग किसी दूसरे के पेशें में दखल नहीं दे सकता।

४. चौथा नियम शिक्षा के अधिकार से संबंधित है। चातुर्वर्ण के अनुसार पहले तीन वर्ग ब्राम्हण, क्षत्रिय, वैश्य ही शिक्षा के अधिकारी है। शूद्रों के लिए शिक्षित होना निषिद्ध है, जिनमें ब्राम्हणों, क्षत्रियों, वैश्यों तथा शूद्रों की स्त्रिया भी शामिल है ।...

◆ ब्राम्हणवाद का चातुर्वर्ण एक जड समाज रचना है,

अपरिवर्तनशील है ... यह समाज रचना का आधार व्यक्ति का वह पद है, वह दर्जा है जो उसे वर्ण विशेष में जन्म ग्रहण करने मात्र से प्राप्त है।

ब्राह्मणवाद समानता को मानता ही नहीं। वास्तव मे वह समानता के सिद्धान्त का शत्रु है।

◆ ब्राम्हणवाद केवल असमानता से संतुष्ट नही। ब्राम्हणवाद के प्राण क्रमिक असमानता में बसे है।

◆ समन्वय तथा मेलजोल की भावना की बजाय, यह क्रमिक असमानता चढते क्रम मे वर्गो में क्रमिक घृणा पैदा कर देगी और उतरते क्रम मे वर्गों में क्रमिक तिरस्कार की भावना पैदा कर देगी और इससे समाज में स्थायी संघर्ष बना रहेगा।

◆ इसका उद्देश्य कमजोरों को दबाना और उनका शोषण करना तथा उनको सर्वथा गुलाम बनाये रखना है। ...

◆ शूद्र और स्त्रियाँ जिनकी मानवता को ब्राम्हणवाद ने बुरी तरह छिन्न-भिन्न कर दिया - सर्वथा शक्तिहीन कर दिया।

◆ वह जान नही सके कि ब्राम्हणवाद ने उनका सारा जीवनरस सोख लिया। ब्राम्हणवाद के विरूद्ध विद्रोह कर उठने की बजाय वह ब्राम्हणवाद के भक्त और समर्थक बन गये। ....

◆ बुद्ध जानते है कि यह ईश्वर की बनाई हुई सामाजिक व्यवस्था बताई जाती है। इसीलिए इसमे सुधार नही हो सकता। इसे केवल समाप्त ही किया जा सकता है।

◆ इन्ही कारणों से बुद्ध ने ब्राम्हणवाद को,सच्चे जीवनमार्ग का परम विरोधी मानकर, अस्वीकार किया। (बुद्ध और उनका धम्म पृ. ७३-७८)

२०. बुद्ध धम्म यह सद्धम्म है ऐसा मेरा पूरा विश्वास है।

२१. मेरा नया जन्म हो रहा है ऐसा मै मानता हूं।

◆ मैने बुद्ध धम्म को क्यों स्वीकार किया यह तुम्हे बताने की इच्छा है। मैंने बुद्ध धम्म को क्यों स्वीकार किया ? क्योंकि इसमे समता, बंधुभाव और स्वतंत्रता है। अन्य धर्मो में ईश्वर और आत्मा इसके बिना दूसरा कुछ नही। मनुष्य के उन्नती में यह जो तीन कारण है, उनका अन्य धर्मों मे समावेश नहीं है। बुद्ध धम्म का अधिष्ठान विश्व में दु:ख है इस तत्व पर आधारित है, ईश्वर और आत्मा इन पर आधारित नहीं है। संसार में आदमी दु:खी है इस तत्वपर आधारित है। इतना ही नही तो उस दु:ख का निवारण करना एवं निवारण करने का मार्ग दिखाना यह धम्म का अंतिम ध्येय है, ऐसा बुद्ध ने बताया है। जो धर्म इस कसौटी पर सही नही उतरेगा वह धम्म कहलाने के योग्य नहीं है, ऐसा बुद्ध ने अपने पहिले सुत्त धम्म चक्र प्रवर्तन में बताया है। ऐसा किसी भी धर्म संस्थापक ने नही बताया है। इसी कारण से मैने बुद्ध धम्म का स्वीकार किया। (डा.बाबासाहेब आंबेडकर लेखण और भाषण खण्ड १८ भाग ३ पृ.५४१)

◆ मैं हिन्दु धर्म मे पैदा हुआ लेकिन हिन्दु धर्म में मरूंगा नहीं ऐसी प्रतिज्ञा मैने की थी यह सच कर दिखाई। मुझे बहुत खुशी हो रही है। मेरी नर्क से मुक्ति हुई ऐसा मै मानता हूं। (डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर लेखन और भाषण खण्ड १८ भाग ३,पृष्ठ ५१८)

२२. अत: मै बुद्ध धम्म की शिक्षाओं के अनुसार आचरण करूंगा ऐसी प्रतिज्ञा करता हूँ।

बुद्ध धम्म प्रचार समिति के कार्य

ꕥ बुद्ध धम्म प्रचार समितिकी स्थापना -
दिनांक 22.5.2004

ꕥ अखिल भारतीय धम्म ज्ञान परिक्षा -
बुद्ध धम्मप्रचार समिति की स्थापना के पूर्व से, सन् 2001 से, हरवर्ष 'बुद्ध और उनका धम्म' इस विषय पर अगस्त महिनेमे अखिल भारतीय धम्म ज्ञान परिक्षा का आयोजन किया जाता है। परिक्षाके आवेदन पत्र मार्च माह मे इस पत्ते पर उपलब्ध होते है - हृदेश सोमकुवर, 363, बाबा बुद्धाजी नगर, कामठी रोड, नागपुर - 440017 । परिक्षा फी रू. 50/- है। डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर द्वारा लिखित 'बुद्ध और उनका धम्म' यह ग्रंथ निशुल्क दिया जाता है; प्रत्येक राज्यसे सर्वाधिक अंक प्राप्त करनेवाले को रू. 2000/- का पुरस्कार, स्मृतिचिन्ह और प्रमाणपत्र दिया जाता है; केन्द्रसे सर्वाधिक अंक पाप्त करनेवाले को स्मृतिचिन्ह और प्रमाणपत्र दिया जाता है और 25% से अधिक अंक प्राप्त करनेवाले सभी को प्रमाणपत्र दिया जाता है।

ꕥ बुद्ध धम्म महोत्सव -
सन 2007 से हरवर्ष माघ पुर्णीमा के अवसर पर तीन दिवसीय बुद्ध धम्म महोत्सव का भव्य आयोजन 'धम्मगिरी' काजलवाणी पर किया जाता है।

❋ दीक्षाभूमि, नागपुर पर धम्म प्रचार -

हरवर्ष दीक्षाभूमि नागपूर में स्टाल नं. 165 और 166 से बुद्ध धम्म प्रचार समितीके कार्यकर्ता धम्मप्रचार करते है।

❋ साहित्य के माध्यम से धम्मप्रचार -

1. सामान्य जनता को सरल भाषा मे धम्मका ज्ञान हो इस उद्देश्य से बुद्ध धम्म प्रचार समितिद्वारा 'बुद्ध संदेश और 22 प्रतिज्ञा' इस नामसे मराठी और हिन्दी भाषामे पाकेट बुक छपवाकर उसका निशुल्क वितरण किया जाता है।
2. धर्मपरिवर्तन क्यों आवश्यक है यह जनता को समझना चाहिए तथा बुद्ध धम्म का महत्व जनता को समझना चाहिए इसलिए समितिद्वारा बाबासाहेब के महत्वपुर्ण भाषण 'मुक्ती कौन पथे और धम्मचक्र प्रवर्तन' प्रकाशित किये है।
3. 'बुद्ध और उनका धम्म' यह ग्रंथ छोटी साईज में प्रकाशित किया गया।
4. बाबासाहेब के विचार और कार्य की जानकारी हो इसलिये सन 2013 का आकर्षक कॅलेण्डर समितिद्वारा छपवाया गया था। उसी प्रकार का कॅलेण्डर सन 2014 का भी छपवाया गया है। हरवर्ष इसी प्रकार का कॅलेण्डर समितिद्वारा छपवाया जाता है।

सर्वसामान्य जनता तक बुद्ध और बाबासाहेब के विचार पहुँचे इसलिये समिति द्वारा लागत मूल्य में उपरोक्त साहित्य उपलब्ध

कराया गया। भविष्यमें भी समितिकी ऐसीही प्रयास रहेगी।

❊ प्रज्ञा प्रकाश (त्रैमासिक) - महाड़ क्रान्ति दिन के अवसर पर दिनांक 20 मार्च 2010 से समिति द्वारा प्रज्ञा प्रकाश नामक त्रैमासिक पत्रिका प्रारंभ की गई। इस पत्रिका में बाबासाहेब और बुद्ध के विचार, वर्तमान घटनाक्रम, न्यायपालिका, सामाजिक स्थिति इत्यादि विषयों का समावेश है। पत्रिका की वार्षिक सदस्यता 80 रूपये है। इस पत्रिका को सभी पाठकों ने सराहा है।

❊ धम्म प्रशिक्षण शिबिर -

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर द्वारा लिखित 'बुद्ध और उनका धम्म' पर आधारित धम्म प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जाता है। यह शिविर 1 या 2 दिवसीय होता है जो स्थानिय धम्म बंधुओं द्वारा उनकी सुविधा नुसार तय स्थान पर लिया जाता है, जिसमें समिति कार्यकर्ता प्रशिक्षण देते है। इन शिविरों के अलावा 7 दिन, 15 दिन या 1 माह की अवधी के लिए शिविर आयोजित किये जा सकते है जिसमें बुद्ध और उनका धम्म के अलावा क्रांति और प्रतिक्रांति, बाबासाहेब के पुर्व हुये समाज सुधारको के कार्य, बाबासाहेब का आंदोलन, बाबासाहेब के बाद उनके अनुयायीयों द्वारा किये गये कार्य तथा वर्तमान सामाजिक स्थिति आदि विषयों पर प्रशिक्षण दिया जाता है।

...बुद्ध धम्म संदेश रैली -

प्रारंभ में सायकल रैलीयां निकालकर धम्म प्रचार किया गया। बाद में पिछले चार वर्षों से जीप रैली के माध्यम से धम्म प्रचार किया जा रहा है। समिति के धम्म प्रचारक प्रतिवर्ष कार्तिक पुर्णिमा से माघ पुर्णिमा तक लगातार 3 माह तक रैली के माध्यम से धम्म प्रचार करते है। अबतक हजारों गांवों में पहुंचकर धम्म प्रचार किया गया। सन् 2012-13 में दिनांक 28 नवंबर 2012 से 22 फरवरी 2013 तक रैली द्वारा मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, उत्तरप्रदेश, आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक, राजस्थान और उड़िसा के 80 जिलों में लगभग 1500 स्थानों पर धम्म प्रचार किया गया। धम्म प्रचार का क्षेत्र प्रतिवर्ष बढ़ रहा है। सन् 2013-14 में इन प्रदेशों के लगभग 90 जिलों में रैली में लगभग 2000 स्थान पर धम्म प्रचार किया जायेगा। रैली में धम्म प्रबोधन के साथ 'बुद्ध और उनका धम्म' बुद्ध संदेश और 22 प्रतिज्ञा, मुक्ति कौन पथे और धम्मचक्र प्रवर्तन यह किताबे तथा नववर्ष का आकर्षक कॅलेंडर और प्रज्ञा प्रकाश को वितरित किया जाता है। खुशी की बात है कि, हर स्थान पर धम्म प्रचारकों को सहयोग मिला है और धम्म के अनुसार आचरण करने के लिए तथा धम्म कार्य करने के लिए प्रेरित हुये है।